

एक दिन बैठकर हम बड़े ध्यान से चिंतन कर रहे थे कि व्यक्ति के मन में आत्महत्या का विचार क्यों आ जाता है? क्यों कभी कभी व्यक्ति भावना के वश आकर अपने शरीर को खत्म कर देना चाहता है? अगर इसकी थोड़ी सी गहराई को देखें तो हम पायेंगे कि आत्महत्या का विचार भी आत्मप्रेम को दर्शाता है। जब व्यक्ति दुःख या दुःख देने वाली स्थितियों से छुटकारा मिलता नहीं देखता, तो वह अज्ञानता वश स्वयं को खत्म कर देने या आत्महत्या को ही दुःखों से छुटकारा पाने का एक रास्ता मानता है। आप सोचो, इतना है व्यक्ति का स्वयं से प्रेम कि वो स्वयं को समाप्त कर देना चाहता है। यह प्रेम का ही तो स्वरूप है कि व्यक्ति को दुःख रींचक मात्र भी पसंद नहीं है। अब प्रश्न उठता है कि जब सुख हमारे अंदर है, प्रेम हमारे अंदर है, तो व्यक्ति बाह्य वस्तुओं के पीछे भागता क्यों है? क्योंकि वह स्वयं से प्रेम करता है। उसका प्रेम एक अभिलाषा के रूप में जन्म लेता है, और वो अभिलाषा स्त्री, पुत्र, वैभव आदि के रूप में होते हैं। इसको वो सुख का एक उपकरण मानता है। लेकिन एक तरफ

हम 'आनंद' हैं

आप ये भी देखिये कि अगर उसको पुत्र, स्त्री या किसी प्रिय वस्तु से दुःख पहुँचता है, तो वो उसको भी छोड़ देता है या छोड़ देना चाहता है, क्योंकि वो सुख स्वरूप है। वो स्वयं से बहुत प्रेम

या सारा संसार नहीं चाहता है। स्वयं के प्रति इतना अगाध प्रेम ही आत्मा के सुख स्वरूप का प्रमाण है। अगर हम थोड़ा और इसकी गहराई में चलें तो कह सकते हैं, कि जब भी हमें कोई प्रिय वस्तु या व्यक्ति मिलते हैं या उसे हम देखते

व्यक्ति जब बूढ़ा हो जाता है, इन्द्रियाँ साथ छोड़ रही होती हैं, फिर भी व्यक्ति का मन जीने का करता है। ऐसा क्यों है? अगर व्यक्ति का स्वभाव दुःख से छुटकारे का होता या दुःख का होता तो वो ऐसा कभी नहीं करता। अगर दुःख स्वयं का स्वरूप होता, तो व्यक्ति कभी भी स्वयं से इतना प्रेम नहीं करता।

कर रहा है। जो भी चीजें उसके सुख में बाधा बनेंगी, व्यक्ति उसे तुरंत छोड़ना चाहता है या छुटकारा पाना चाहता है, यही निशानी है व्यक्ति के सुख स्वरूप होने की। कोई भी व्यक्ति, चाहे वो स्वयं को पाने या स्वयं को छोड़ने की राह पर हो, वो स्वयं, सिर्फ स्वयं और सिर्फ स्वयं के लिए है। स्वयं के प्रति व्यक्ति का इतना प्रेम होता है कि वह या तो सारा संसार चाहता है,

हैं तो आनंद होता है, सिर्फ देखने मात्र तक। लेकिन जब हम उस वस्तु को पा लेते हैं या उस व्यक्ति से मिल लेते हैं तो आनंद कई गुणा बढ़ जाता है। उसे हम मोद कहते हैं। और जब हम उसका उपभोग कर लेते हैं, तो उसी आनंद को दुनिया में लोग प्रमोद कहते हैं। अब आत्मा का मूल स्वभाव देखो क्या है कि जब तक वो उस व्यक्ति या वस्तु से जुड़ा है, जब

तक उसे उससे थोड़ा बहुत सुख मिल रहा है, तब तक तो वो उसका उपभोग कर रहा है, लेकिन उसका उस व्यक्ति या वस्तु से अलग होते ही आनंद समाप्त हो जाता है। अब ये निरंतर चलने वाली प्रक्रिया मनुष्य को मरते दम तक उस आनंद की तलाश के लिए भटकाती रहती है। अब आत्मा का आनंद अगर स्थायी नहीं होता, तो उसे बोध के कारण इतना सुख नहीं मिलता। अब हम इसको ऐसे समझ लेते हैं कि व्यक्ति पूरे जीवन सुख और आनंद की तलाश में बड़े बड़े पहाड़ लांघता है,

में सुख मिल रहा है। ऐसा नहीं है कि उनका उसमें इंटरैस्ट है, इंटरैस्ट वर्ड तो आज आया है। लो विबाना



- ब्र.कु. अनुज, दिल्ली

आत्मा की सुख लेने की नेचर है, वो हर हाल में सुख लेकर ही छोड़ती है चाहे कहीं से भी मिले। थोड़ा सा भी यदि उसे बंधन महसूस होता है तो वो तुरंत अपने आपको किनारे करके अलग अलग तरह के बहाने बनाती है मुझे ये काम है, मैं नहीं कर सकता, ऐसी छोटी छोटी बातें, क्योंकि ये उसकी नेचर है, उसे सुख ही चाहिए आत्मा आनंद ही है, अर्थात् हम आनंद है, सुख स्वरूप है, हम दुःख तो ले ही नहीं सकते। और हमारे यहाँ एक बात सिखायी भी जाती है कि हमने द्वाइ ह. जार साल तक इस अवस्था को देखा है, जीवन के साथ। व्यक्ति के सुख का अंतिम स्वरूप आनंद ही है। तो हे आनंद स्वरूप आत्माओं, इन अस्थायी बंधनयुक्त दुनिया से अपने आपको निकालकर पहचानो खुद को, क्योंकि दुःख आपका स्वरूप है ही नहीं। आप शुरू से आनंदित ही हो, बस आप समझ नहीं पा रहे...



इतनी ऊँची चोटी पर चढ़ता है, बड़े बड़े अचीवमेंट्स करता है, कितनी सारी पढ़ाई करता है, सिर्फ एक चीज के लिए, उसको सुख चाहिए हर हाल में। इसीलिए आजकल के दौर में युवा पीढ़ी भी, चाहे समय लॉस हो रहा है, चाहे उससे उनको नुकसान भी बहुत हो रहा है, फिर भी मोबाइल, लैपटॉप फिल्मों

उपलब्ध पुस्तकें जो आपके जीवन को बदल दें



प्रश्न:- परमात्मा कहते हैं कि मन के द्वारा सबको वायब्रेशन्स दो, वाचा के द्वारा ज्ञान दान करो और कर्मणा के द्वारा गुणों का दान करो। यह तीनों कार्य साथ-साथ करने की विधि क्या है?

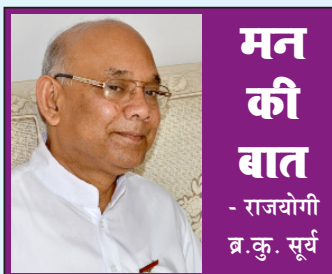
उत्तर:- सारे दिन में यदि हमारे मन में श्रेष्ठ विचार होंगे तो सारे दिन हमारे चारो ओर श्रेष्ठ वायब्रेशन्स फैलते रहेंगे। जितना सारा दिन हम योगयुक्त रहेंगे तो हमसे चारो ओर लाइट और माइट फैलती रहेगी, क्योंकि योगी आत्माएं चलते-फिरते लाइट हाउस हैं।

इसी कर्मक्षेत्र पर रहते हुए हम स्वमान का अभ्यास करेंगे तो उसी तरह के वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते जाएंगे। जब भी कोई व्यक्ति हमें मिले तो हम उसे ज्ञान दें, उसे सच्ची राह दिखायें, इस भावना के साथ कि इसका भी प्रभु मिलन हो जाए।

कर्म करते हुए यदि हम सरलचित्त होंगे, यदि हमारे चेहरे पर मुस्कान होगी, कर्म करते भी हम यदि शांत स्वभाव को कायम रखेंगे, कर्म में ऊपर-नीचे होने पर हम तनावग्रस्त नहीं होंगे, यदि कर्मक्षेत्र पर हम बहुत सहनशील बनकर रहेंगे, हमारी वाणी में मधुरता होगी, हम क्रोध और अहंकार से मुक्त होंगे तो लोग हमसे गुण सीखते रहेंगे। इन तीनों सेवाओं से अत्यधिक पुण्य का बल मिलता है।

प्रश्न:- मैं कुछ समय से ही ज्ञान में हूँ, मेरे जीवन में कठिन समय चल रहा है। बिज़नेस में बहुत घाटा होने लगा है। इन समस्याओं से मुक्त होने के लिए क्या अभ्यास करें?

उत्तर:- आप अपने चित्त को शांत करें और ये संकल्प करें कि ये कठिन समय जल्दी ही समाप्त हो जाएगा और हमारे अच्छे दिन जल्दी ही आ जाएंगे। रोज



सवरे आँख खुलते ही आप ये अभ्यास करें - मैं बहुत भाग्यवान हूँ, मैं बहुत सुखी हूँ, हमारे अच्छे दिन चल रहे हैं। ये तीन संकल्प पाँच बार करें। आपके जीवन में ये जो विघ्न आये हैं उन्हें दूर करने के लिए इक्कीस दिन की विघ्न-विनाशक योग भट्टी करें। एक घंटा प्रतिदिन पॉवरफुल योग करें। योग से पहले सात बार दो स्वमान याद करें - "मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और

विघ्न-विनाशक हूँ।"

प्रश्न:- हमें सर्व धर्मों की आत्माओं को सकाश देनी है। यह सकाश किस प्रकार दी जाती है?

उत्तर:- हम जिस स्थिति में स्थित रहते हैं, हमसे वैसे ही वायब्रेशन्स चारो ओर फैलते हैं। हम यदि श्रेष्ठ स्वमान में स्थित होकर व योग-युक्त होकर विश्व को वायब्रेशन्स देंगे तो वह सभी को जाएंगे और अनेक आत्माओं के दुःखों को दूर करेंगे। हमें यह अनुभव करना है कि हम पूर्वज हैं। इसी प्रकार मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ - इस स्मृति में रहने से माया के कीटाणु नष्ट होते जाएंगे और सभी को सकाश भी मिलती रहेगी। यदि हम मास्टर सर्वशक्तिवान के स्वमान में स्थित होकर ग्लोब को सकाश देंगे तो विश्व को हमारे द्वारा श्रेष्ठ वायब्रेशन्स मिलते रहेंगे।

प्रश्न:- परमात्मा ने कहा है कि सकाश देने की सेवा में लग जाओ तो तुम निर्विघ्न बन जाएंगे, सकाश देने से क्या लाभ होगा?

उत्तर:- सकाश देने की सेवा करने से सर्वप्रथम हमारा योग-अभ्यास सरल हो जाएगा, दूसरा - जीवन की

परेशानियाँ, उलझनें, अकेलापन व बंधन भी समाप्त हो जाएंगे, तीसरा - हमारे पॉवरफुल वायब्रेशन्स से विश्व की अनेक आत्माओं को सहयोग मिलेगा जो कि बहुत बड़ा पुण्य होगा। ऐसा पुण्य सदा करने से पाप कर्मों का दबाव कम होगा और जीवन के विघ्न व बंधन भी कट जाएंगे

प्रश्न:- अमृतवेले हम क्या-क्या अभ्यास करें जो ये समय पूर्ण सफल हो और हमें सम्पूर्ण सन्तुष्टता मिले?

उत्तर:- पहले स्वयं को स्वमान में स्थित करें, फिर 5 स्वरूपों का अभ्यास 3 बार करें। इससे मन एकाग्र हो जाएगा व स्मृति स्वरूप हो जाएगा। फिर करें रूहानी ड्रिल का अभ्यास, इसमें ज्वालामुखी योग भी हो जाएगा। रूहानी ड्रिल में मैं आत्मा भृकुटि सिंहासन पर विराजमान हूँ, स्वराज्याधिकारी हूँ, कुछ देर इस स्वरूप में स्थित रहो। तत्पश्चात अपने को प्रकाश के शरीर में बैठा फरिश्ता देखें जिससे चारो ओर प्रकाश फैल रहा है। फिर अपने फरिश्ते स्वरूप से सूक्ष्म वतन में चलें, बाप दादा से मिलें, बात करें, गले मिलें, शुक्रिया करें, उनका वरदानी हाथ सिर पर रखायें। फिर फरिश्ते शरीर को यहीं छोड़कर परमधाम चलें और सर्वशक्तिवान के पास रहें, उस पर मन व बुद्धि को स्थिर करें, उसकी किरणों ग्रहण करें।



रुड़की-उत्तराखण्ड। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए पॉवर ग्रिड का परिशन के मैनेजर संजय अरोड़ा, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विमला तथा ब्र.कु. सोनिया।

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

24x7 Ad-Free Value Based Channel

Peace of Mind CHANNEL

TATA Sky 1065 airtel digital TV 678

VIDEOCON d2h 497 dishtv 1087

+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in